Prof. Shubh Kumar

Assistant Professor in Sanskrit

Govt. Degree College, Kathua.

E-Content:

B.A. 3rd Sem, Unit-Ist (Skill JU)

वृहदवकहड़ाचक्रम्

1. वारादि प्रकरण
2. नक्षत्र प्रकरण
3. राशि प्रकरण
4. मुहूर्त्त प्रकरण

1. अथ वारादि–प्रकरणम्

वारनामानि–

आदित्यश्चन्द्रमा भौमो बुधश्चाथ बृहस्पतिः।

शुक्रः शनैश्चरश्चैते वासराः परिकीर्तिताः।।1।।

आदित्य = रवि, चन्द्रमा = सोम, मंगल, बुध, वृहस्पति, शुक्र, शनि ये सात वार है।।1।।

शुभाशुभवाराः–

गुरुश्चन्द्रो बुधः शुक्रः शुभा वाराः शुभे स्मृताः।

क्रूरास्तु क्रूरकृत्येषु ग्राह्या भौमार्कसूर्यजाः।।2।।

बुध, गुरु, शुक्र और (शुक्ल पक्ष में) चन्द्र ये शुभ दिन हैं। इनमें शुभ कार्य सिद्ध होता है। रवि, मंगल, शनि ये क्रूर एवं पाप हैं। इन दिनों में क्रूर कम्र सिद्ध होता है।।2।।

आवश्यके वारदोषपरिहारः–

न वारदोषाः प्रभवन्ति रात्रौ देवेज्यदैत्येज्यदिवाकराणाम्।

दिवा शशांकार्कजभूसुतानां सर्वत्र निन्धो बुधवारदोषः।।3।।

आवश्यक कार्य में सूर्य, गुरु, शुक्र के दिन का दोष रात्रि में नहीं होता है। अर्थात् इनमें दिन में जो कार्य निषिद्ध हैं उसे रात्रि में किया जा सकता है। इसी प्रकार सोम, शनि, मंगल को रात्रि का निषिद्ध कार्य दिन किया जा सकता है, इनमें रात्रि का दोष दिन में नही होता है। बुधवार का दोष रात्रि और दिन समान रूप से निन्द्य है।।3।।

तैलाभ्यङ्गेशुभाशुभवाराः–

रविस्तापं, कान्तिं वितरति शशी, भूमितनयो

मूतिं, लक्ष्मीं, चान्द्रिः, सुरपतिगुरुर्वित्तहरणम्।

विपत्तिं दैत्यानां गुरुखिलभोगानुगमनं

नृणां तैलाभ्यङ्गात् सपदि कुरुते सूर्यतनयः।।4।।

रवि के दिन तेल लगाने से ताप, सोम के दिन शोभा की वृद्धि, मंगल के दिन मृत्युभय, बुध के दिन लक्ष्मी प्राप्ति, गुरु के दिन धन की हानि, शुक्र के दिन विपत्ति और शनि के दिन तेल लगाने से सुख–शान्ति मिलती है।।4।।

आवश्यके तैलाभ्यङ्गे वारदोषपरिहारः–

रवौ पुष्पं गुरौ दूर्वा मृत्तिका कुजवासरे।

भार्गवे गोमय दद्यात् तैलदोषस्य शान्तये।।5।।

आवश्यक कार्य में रवि के दिन पुष्प के साथ तेल लगाना चाहिए। गुरु के दिन दूर्वा, मंगल के दिन मिट्टी, शुक्र के दिन गोबर मिलाने से दोष नहीं होता है।।5।।

मन्त्रितं क्वथितं तैलं सार्षपं पुष्पवासितम्।

द्रव्यान्तरयुतं वापि नैव दुष्येत् कदाचन।।6।।

पकाया हुआ तेल, सरसों का तेल, पुष्पवासित तेल और किसी भी द्रव्य के संयोग से बना तेल निषिद्ध दिनों में भी लगाया जा सकता है।।6।।

श्रीपतिः, मासज्ञानम्–

मधुस्तथा माधवसंशकश्च शुक्रः शुचिश्चाथ नभो नभस्यौ।।

तथेष उर्जश्च सहः सहस्यौ तपस्तपस्याविति ते क्रमेण।।7।।

मधु = चैत्र, माधव = वैशाख, शुक्र = जेठ, शुपि = आषाढ़, नभ = श्रावण, नभस्य = भाद्रपद, ईष = आश्विन, ऊर्ज = कार्तिक, सहः = मार्गशीर्ष, सहस्य = पौष, तपः = माघ, तपस्य = फाल्गुन, ये बारह मास वर्ष में होते हैं।।7।।

ऋतूनाह श्रीपतिः

मृगादिराशिद्वयभानुयोगात् षडर्त्तवः स्युः शिशिरो बसन्तः।

ग्रीष्मश्च वर्षाश्च शरश्च तद्वद्धेमन्तनामा कथितश्च षष्ठः।।8।।

मकर के सूर्य से दो–दो राशि के सूर्य से शिशिरादि 6 ऋतुएँ होती हैं। मकर, कुम्भ (शिशिर), मनी, मेष (वसन्त), वृष, मिथुन (ग्रीष्म), कर्क, सिह (वर्षा), कन्या, तुला (शरद्), वृश्चिक, धनु (हेमन्त), ये छः ऋतुएँ वर्ष में होती है।।8।।

अयनज्ञानम–

शिशिरपूर्वमृतुत्रयमुत्तरं ह्ययनमाहुरहश्च तदा परम्।

भवति दक्षिणमन्यऋतुत्रये निगदिता रजनी मरुतां च सा।।9।।

मकर, कुम्भ, मीन, मेष, वृष, मिथुन इन 6 राशियों के सूर्य के भ्रमण काल को छः मास उत्तरायण कहते हैं, जिन्हें देवताओं का दिन कहते हैं। कर्क, सिंह, कन्या, तुला, वृश्कि, धनु इन छः राशियों पर सूर्य के भ्रमणकाल को छ5 मास दक्षिणायन कहते हैं, जिन्हें देवताओं की रात्रि कहते हैं।।9।।

अयनकृत्यम्–

गृहप्रवेशत्रिदशप्रतिष्ठा विवाहचौलव्रतबन्धपूर्वम।

सौम्यायने कर्म शुभं विधेयं यद् गर्हितं तत्खलु दक्षिणे च।।10।।

नूतन गृह–प्रवेश, देव–प्रतिष्ठा, विवाह, मुण्डन, यज्ञोपवीत आदि शुभ कार्य उत्तरायण में होते हैं और निन्दित कार्य दक्षिणायन में होते हैं।।10।।

तिथिज्ञानम्–

प्रतिवच्च द्वितीया च तृतीया तदनन्तरम्।

चतुर्थी पंचमी षष्ठी सप्तमी चाष्टमी तथा।।11।।

नवमी दशमी चैवैकादशी द्वादशी ततः।

त्रयोदशी ततो ज्ञेया ततः प्रोप्ता चतुर्दशी।।

पौर्णिमा शुक्लपक्षे तु कृष्णपक्षे त्वमा स्मृता।।12।।

प्रतिपदा, द्वितीया, तृतीया, चतुर्थी, पंचमी, षष्ठी, सप्तमी, अष्टमी, नवमी, दशमी, एकादशी, द्वादशी, त्रयोदशी, चतुर्दशी, शुक्लपक्ष में पूर्णिमा, कृष्णपक्ष में उसी पन्द्रहवीं तिथि को अमा कहते हैं।।11–12।।

तिथीनां नन्दादिसंज्ञा–

नन्दा न भद्रा च जया च रिक्ता, पूर्णेति सर्वास्तिथयः क्रमात्स्युः।

कनिष्ठमध्येष्टफलास्तु शुक्ले कृष्णे भवन्त्युत्तममध्यहीनाः।।13।।

नन्दा = 1–6–11, भद्रा = 7–7–12, जया = 3–8–13, रिक्ता 4–14, पुर्णा = 5/10/15 इस प्रकार शुक्ल प्रतिपदा से तीन पर्याय करने पर क्रम में नन्दा, भद्रा, जया, रिक्ता, पूर्णा 15 तिथियों की संज्ञा हैं। ये शुक्लपक्ष में

कनिष्टठ, मध्य तथा इष्ट फल देनेवाली हैं और कृष्णपक्ष में उत्तम, मध्यम तथा हीन फल देनेवाली है।13।।

नन्दादिषु कृत्यमाह श्रीपतिः–

नन्दासु चित्रोत्सववास्तुतन्त्रक्षेत्रादि कुर्वीत तथैव नृत्यम्।

विवाहभूषाशकटाध्वयाने भद्रासु कार्याण्यपि पौष्टिकानि।।14।।

नन्दा तिथि में चित्र, उत्सव, वास्तु, तन्त्र, क्षेत्र आदि कार्य शुभ होते हैं। भद्रा में विवाह, भूषण, शकट, यात्रा, पौष्टिक कार्य शुभ माने गये हैं।।10।।

जयासु सङग्रामबलोपयोगिकार्याणि सिद्धचन्ति हि निर्मितानि।

रिक्तासु विद्धिड्वधबन्धघातविषाग्निशस्त्रादि च यान्ति सिद्धिम।।15।।

जया में संग्राम, बलोपयोगी, निर्माण कार्य सिद्ध होते हैं, रिक्ता में शत्रुता (वैर), वध, घात, विष, अग्नि, शस्त्रसम्बन्धी कार्य सिद्ध होते हैं।।1115।।

पूर्णासु माङ्गल्यविवाहयात्राः सशान्तिकं पौष्टिककर्म कार्यम्।

सदैव दर्शे पितृकर्म युक्तं नान्यद्विदध्याच्छुभमङ्गलादि।।16।।

पूणासि सभी प्रकार के मंगल कार्य, यात्रा और शान्ति तथा पौष्टिक कर्म सिद्ध होते हैअमावास्या में केवल पितृ–कार्य किये जाते हैं, अन्य शुभ कार्य इसमें नहीं करना चाहिये।।16।।

सिद्धियोगाः–

शुक्रे नन्दा बुधे भद्रा जया क्षितिजनन्दने।

शनो रिक्ता गुरौ पूर्णा सिद्धियोगाः प्रकीर्तिताः।।17।।

शुक्र को नन्दा 1–6–11, बुध को भद्रा 2–7–12, मंगल को जया 3–8–13, शनि को रिक्त 4–9–14 और बृहस्पति को पूर्णा 5–10–15 हो तो सिद्ध योग है, जो यात्रा में प्रशस्त है।।18।।

मृत्युयोगाः

आदित्य–भौमयीनन्दा भद्रा भार्गव–चन्द्रयोः।

बुधे जया गुरौ रिक्ता शनो पूर्णा च मृत्युदा।।18।।

रवि और मंगल को बन्दा 1–6–11, शुक्र और सोम को भद्रा 2–7–12, बुध को जया 3–8–13 बृहस्पति को रिकता 4–9–14 और शनि को पूर्णा 5–10–15 हो तो मृत्यमोग है। इसमें यात्रा नहीं करनी चाहिये।।18।।

अमृतयोगाः–

चन्द्रार्कयोर्भवेत् पूर्णा कुजे भद्रा जया गुरौ।

शनिचन्द्रजयोनन्दा भृगौ रिक्ताऽमृताह्वया।।19।।

रवि और सोम के दिन पूर्णा 5–10–15, मंगल के दिन भद्रा 2–7–12, बृहस्पति के दिन जया 3–8–13, शनि और बुध को नन्दा अमृत योग हैं। ये यात्रा के लिए मगलदायक है।19।।

2. अथ नक्षत्रप्रकरणम्

अथ नक्षत्रनामानि–

अश्विनी भरणी चैव कृत्तिका रोहिणी तथा।

मृगशीर्षस्तथाऽऽर्द्रा च पुनर्वसुरतः परम्।।1।।

पुष्याश्लेषामधाः प्रोक्ताः पूर्वा चोत्तरफाल्गुनी।

हस्तश्चित्रा तथा स्वाती विशाखा तदनन्तरम्।।2।।

अनुराधा तथा ज्येष्ठा मूलभं च ततः परम्।

पूर्वाषाढोत्तराषाढाऽभिजिच्च श्रवणं ततः।।3।।

धनिष्ठा च ततो ज्ञेया शततारा ततः परम्।

पूर्वाभाद्रपदा प्रोक्ता ततश्चोत्तरभाद्रकम्।।4।।

रेवती चेति भानां हि नामानि कथितानि वै।

सप्तविशतिसंख्यानां सदसत्फलहेतवे।।5।।

अश्विनी, भरणी, कृत्तिका, रोहिहणी, मृगशीर्ष, आर्द्रा, पुनर्वसु, पृष्य, आश्लेषा, मधा, पूर्वाफाल्गुनी, उत्तराफाल्गुनी, हस्त, चित्रा, स्वाती, विशाखा, अनुराधा, ज्येष्ठा, मूल, पूर्वाषाढा, उत्तराषाढा, अभिजित्, श्रवण, धनिष्ठा, शतभिषा, पूर्वाभाद्र पदा, उत्तराभाद्रपदा और रेवती ये 29 नक्षत्र कहे गये हैं। पर मूल में 27 नक्षत्रों का ही नाम आया है, इसका कारण यह है कि उत्तराभाद्रपदा का अन्तिम चतुथशि और श्रवण का प्रथम पंचदशांश मिलकर अभिजित् का मान है। इसलिए अभिजित् की गणना अलग नहीं होती है।

संहिताग्रन्थों में तो नक्षत्रों का अलग–अलग भोग बताया गया है। उसमें सब नक्षत्रों के भोग का योग चक्रकला में 21600 घटाकर शेष अभिजित् का भोग माना है।।1–5।।

अथ नक्षत्रदेवता–

अश्विनावन्तको वह्निस्ततो धाता निशाकरः।

रुद्रोऽदितिर्गुरुः सर्पः पितरो भग एव च।।6।।

अर्यमा च रविस्त्वष्टा वायुर्वह्निपरन्दरौ।

मित्रः शक्रश्च निर्ऋतिः सलिलं च ततः परम्।।7।।

विश्वेदेवा विधिर्विष्णुर्वसवो वरुणस्ततः।

ततोऽजपादहिर्बुध्न्यः पूषा नक्षत्रदेवता।।8।।

अश्विनी का स्वामी अश्विनीकुमार, भरणी का यम, कृत्तिका का अग्नि, रोहिणी का ब्रह्मा, मृगशीर्ष का चन्द्रमा, आर्द्रा का रुद्र, पुनर्वसु का अदिति, पुष्य का बृहस्पति, आश्लेषा का सर्प,

मधा का पितर, पूर्वाफाल्गुनी का भग (सूर्यविशेष), उत्तराफाल्गुनी का अर्यमा (सूर्यविशेष), हस्त का रवि, चित्रा का त्वष्टा (विश्वकर्मा), स्वाति का वायु, विशाखा का अग्नि और इन्द्र, अनुराधा का मित्र (सूर्य–विशेष), ज्येष्ठा का इन्द्र, मूल का निर्ऋति (राक्षस), पूर्वाषाढ़ा का जल, उत्तरापाढ़ा का विश्वेदेव, अभिजित् का ब्रह्मा, श्रवण का विष्णु, धनिष्ठा का अष्टवसु, शतभिषा का वरुण, पूर्वाभाद्रपदा का अहिर्बुध्न्य (सूर्यविशेष), रेवती का पूषा (सूर्यविशेष) इस प्रकार अश्विन्यादि नक्षत्रों के देवता कहे गये हैं। जिस नक्षत्र के जो देवता हैं उन देवताओं से भी उन नक्षत्रों का ज्ञान होता है।

जैसे–रुद्र से आर्द्रा, विष्णु से श्रवण, अजपाद् से पूर्वाभाद्रपदा इत्यादि।।6–9।।

शतपदचक्रविवरणम्–

चूचेचोलाऽश्विनी प्रोक्ता लीलूलेलो भरण्यथ।

आइऊए कृत्तिका स्यादोवावीवू तु रोहिणी।।9।।

वेवोकाकी मृगशिरः कूधङछास्तथाऽऽर्द्रकाः।।

केकोहाही पुनर्वसूर्हूहेहोडा तु पुष्यभम।।10।।

डीडूडेडो तु आश्लेषा मामीमूमे मधा स्मृता।

मोटाटीटू पूर्वफल्गु टेटोपाप्युत्तर तथा।।11।।

पुषणाठां हस्ततारा पेपोरारी च चित्रिका।

रूरेरोता स्मृता स्वाती तीतूतेतो विशाखिका।।12।।

नानीनूनेऽनुराधक्षं नोयायीयू च शुक्रभम्।

येयोभाभी मूलतारा र्पूषाढा भुधाफढाः।।13।।

भेभोजाज्युत्तराषाढा जूजेजोषाभिजिद् भवेत्।

खीखूखेखो श्रवणभं गागीगूगे धनिष्ठिका।।14।।

गोसासीसू शतभिषक् सेसोदादी तु पूर्वभाक्।

दूथझञ उत्तराभं देदोचाची तु रेवती।।15।।

चू चे चो ला अश्विनी, ली लू ले लो भरणी, आ ई ऊ ए कृत्तिका, ओ वा वी वू रोहिणी, वे वो का की भृगशिरा, कू घ ङ छ आर्द्रा, के को हा ही पुनर्वसु, हू हे हो डा पुष्य, डी डू डे डो आश्लेषा, मा मी मू मे मधा, मो टा

टी टू पूर्वाफाल्गुनी, टे टो पा पी उत्तराफाल्गुनी, पू षा णा ठ हस्त, पे पो रा री चित्रा, रु रे रो ता स्वाती, ती तू ते ता विशाखा, ना नी नू ने अनुराधा, नो या यी यू ज्येष्ठा, ये यो भा भी मूल, भु धा फ ढ पूर्वाषाढ़ा, भे भो जा जी उत्तराषाढ़ा, जू जे जो ष अभिजित्, चाी खू खे खो रवण, गा गी गू गे धनिष्ठा, गो सा सी सू शतभिषा, से सो दा दी पूर्वाभाद्रपद, दू थ झ ञ उत्तराभाद्रपद, दे दो च ची रेवती। इस प्रकार प्रत्येक नक्षत्र में चार–चार चरण होते हैं और 9–9 चरण की एक–एक राशि होती है। नक्षत्र के जिस चरण में जातक का जन्म हो तदनुसार अश्विन्यादि नक्षत्रों का चरणज्ञान करके जिस चरण में जो वर्ण हो उसी वर्ण के अनुसार जातक का नामाद्यक्षतर होता है।

उदाहरण–

जैसे–मृगशिरा के तृतीय चरण में जिसका जन्म होगा, उसका नाम 'कलमाकान्त', 'कलाधर', 'काशीनाथ' इत्यादि हो सकता है। यदि इस पद्धति के अनुसार ङ, ण, ञ वर्ण विशिष्ट नक्षत्र का चरण हो तो उसका नामाद्यक्षर ग, ड, ज होता, जैसे– आर्द्रा के तृतीय चरण में होने से 'गदाधर', 'गजानन', 'गङ्गाधर' इत्यादि होगा।।1–25।।

ध्रुवगण तथा तत्कृत्यं च–

उत्तरात्रयरोहिण्यो भास्करश्च ध्रुवं स्थिरम्।

तत्र स्थिरं बीजगे्हशान्त्यारामादिसिद्धये।।16।।

तीनों उत्तरा, रोहिणी, रवि दिन ध्रु व और स्थिर संज्ञक हैं, इसमें स्थिर कार्य बीज बोनां, गृह कार्य, शान्तिकर्म, वाटिका कार्य करना चाहिये।।16।।

चरगणं तत्प्रयुक्तकार्यमाह–

स्वात्यादित्ये श्रुतेस्त्रीणि चन्द्रश्चापि चरं चलम्।

तस्मिन् गजादिकारोहो वाटिकागमनादिकम्।।17।।

स्वाती, पुनर्वसु, श्रवण, धनिष्ठा, शतभिषा नक्षत्र और सोमवार का दिन चर और चल संज्ञक हैं। इसमें घोड़ा, हाथी आदि स्वयं चलनेवाले वाहन पर चढ़ना और वाटिका सम्बन्धी कार्य तथा यात्रा शुभ माने गये हैं।17।।

उग्रगणं तत्कृत्यं च–

पूर्वात्रयं याम्यमधे उग्रं क्रूरं कुजस्तथा।

तस्मिन् धाताग्निशाठचानि विषश्स्त्रादि सिद्धचति।।18।।

तीनों पूर्वा, भरणी, मघा और मंगल का दिन उग्र और क्रूर संज्ञक हैं। इसमें घात, अग्नि, शठता, विष, शस्त्र आदि संघातक कार्य सिद्ध होते हैं।।19।।

मिश्रगणं तत् कृत्य च

विशाखाग्नेयभे सौम्यो मिश्रं साधारणं स्मृतम्।

तत्राऽग्निकार्यं मिश्रं च वृषोत्सर्गादिसिद्धये।।19।।

कृत्तिका, विशाखा नक्षत्र और बुध का दिन मिश्र और साधारण संज्ञा हैं। इसमें मिश्रित कार्य, अग्निकार्य और वृषोत्सर्ग सिद्ध होते हैं।।19।।

लघुगणं तत्कृत्यं च–

हस्ताश्विपुष्याभिजितः क्षिप्रं लघु गुरुतथा।

तस्मिन् पण्यरतिज्ञानभूषाशिल्पकलादिकम्।।20।।

हस्त, अश्विनी, पुष्य, अभिजित् नक्षत्र और गुरु का दिन लघु और क्षिप्र संज्ञक हैं। इसमें विपणी, मैथुन, ज्ञानोपार्जन, शिल्प, कला आदि कार्य सिद्ध होते हैं।।20।।

मृदुगणं तत्कृत्यं च–

मृगान्त्यचित्रामित्रक्षं मृदु मैत्रं भृगुस्त।

तत्र गीताम्बरं क्रीडा मित्रकार्य विभूषणम्।।21।।

मृगशिरा, चित्रा, रेवती, अनुराधा और शुक्र दिन मृदु और मैत्र संज्ञक हैं। इसमें गीत गाना, वस्त्र–धारण, खेल, मित्रता करना, भूषणधारण शुभ होता है।। 21।।

मूलेन्द्रार्द्राहिभं सौरिस्तीक्ष्णं दारुणसंज्ञकम्।

तत्राभिचारघातोग्रभेदाः पशुदमादिकम्।।22।।

मूल, ज्येष्ठा, आश्लेषा नक्षत्र और शनि का दिन तीक्ष्ण और दारुण संज्ञक है। इसमें अभिचार (मारण), घात, उग्र, भेद, पशु दमन (कुटाना तथा नाथना) आदि कार्य सिद्ध होते है।।22।।

पञ्चकम्–

धनिष्ठार्द्धोत्तरं पञ्च ऋक्षेष्वेषु त्येजद् बुधः।

याम्यदिग्गमनं शय्या पूरणं गेहगोपनम्।।23।।

स्तम्भोच्छ्रायं प्रतेदाहं तृणकाष्ठादि संग्रहम्।

भवेत् पञ्चगुणं चात्र जात् लब्धं मृतं मतम्।।24।।

धनिष्ठा का उत्तरार्ध, शतभिषा, पूर्वाभाद्रपद, उत्तराभाद्रपद, रेवती ये पञ्चक नक्षत्र हैं। इसमें स्तम्भ गाड़ना, प्रेतदाह, तृणकाष्ठ संग्रह्, दक्षिण दिशा की यात्रा, चारपाई तथा घर का छाना वर्जित है। क्योंकि शास्त्रकारों ने पञ्चक का पाँचगुणा फल माना है। जैसेः– एक शव का दाह करने पर पाँच शव का दाह करना पड़ता है। इसी तरह वर्णित प्रत्येक कार्य का पंचगुणिन फल होता है।।23–24।।

सफलत्रिपुष्करयोग–

भद्रातिथी रविज–भूतन वार्कवारे,

द्वीशार्यमाजचरणादितिवह्निवैश्वे।

त्रैपुष्करो भवति मृत्युविनाशवृद्धौ,

त्रैगुण्यदो द्विगुणकृद्वसुतर्क्षचान्द्रे।।25।।

भद्रातिथि 2।6/12 दिन, शनि, मंगल, रवि, नक्षत्र–कृत्तिका, पुनर्वसु उत्तरा–फाल्गुनी, विशाखा, उत्तराषाढ़, पूर्वाभाद्रपद में से किपो तोन का एक दिन संयोग होने पर त्रिपुष्कर योग होता है। इसमें मृत्यु, हानि तथा वृद्धि, लाभ होने पर त्रिगुणित फल होता है और उन्हीं तिथि और दोनों में मृगशिरा, चित्रा, धनिष्ठा का योग होने पर द्विपुष्कर योग होता है। इसमें द्विगुण फल होता है।।25।।

नक्षत्राणामन्धादि संज्ञा–

अन्धकमथमन्दाक्षं मध्यमसंज्ञं सुलोचनं पश्चात्।

पर्यायेण च गणयेच्चतुर्विधं ब्रह्मधिष्ण्याँश्च।।26।।

रोहिणी से चार आवृत्ति करने पर चार अन्धादि संज्ञक नक्षत्र होते हैं।

जैसेः–

अन्धाक्ष	मन्दाक्ष	मध्याक्ष	सुलोचन
रोहिणी, पुष्य उ. फा., विशाखा पू. षा., धनिष्ठा रेवती।	मृगशिरा, आश्लेषा हस्त, अनुराधा उ. षा., शतभिष अश्विनी।	आर्द्रा, मधा चित्रा, ज्येष्ठा अभिजित्, पू. भा. भरणी।	पुनर्वसु, पू. का. स्वाती, मूल श्रवण, ऊ, भा. कृत्तिका।।26।।

अन्धादिनक्षत्राणां फलम्–

विनष्टार्थस्य लाभोऽन्धे शीघ्रं मन्दे प्रयत्नतः।

स्याद् दूरे श्रवणं मध्ये श्रुत्याप्ती न सुलोचने।।27।।

अन्ध संज्ञक नक्षत्रों में भूली हुई वस्तु शीघ्र मिलती है। मन्दाक्ष में प्रयास करने पर मिलती है और मध्याक्ष में दूर श्रवण मात्र होता है और सुलोचन में न सुनाई पड़ती है और न प्राप्त होती है।।27।।

करणज्ञानम्–

वर्तमानतिथिर्व्येकाद्विघ्नी सप्तावशेषकम्।

तिथेः पूर्वार्धकरणं तत् सेकं स्यात्परे दले।।38।।

एक तिथि में दो करण होता है। वर्तमान करण जानने के लिए तिथि को दूना कर एक घटाकर सात का भाग देने पर शेष वर्तमान तिथि के पूर्वार्ध में करण होता है। शेष में एक जोड़ने पर तिथि के उत्तरार्ध में करण होता है।।29।।

योगनामानि–

विष्कुम्भः प्रीतिरायुष्मान् सौभाग्यः शोभनाभिधः।

अतिगण्डः सुकर्माख्यो धृतिः शूलाभिधानकः।।29।।

गण्डो वृद्धिर्ध्रुवश्चाथ व्याघातो हर्षणाह्वयः।

वज्रसिद्धिर्व्यतीपातो वीरयान्परिधः शिवः।।30।।

सिद्धिः साध्यः शुभः शुक्लो ग्रह्मा चेन्द्रोऽथ वैधृतिः।

योगानां ज्ञेयमेतेषां स्वनाभसदृशं फलम्।।31।।

वाक्पतेरर्कनक्षत्रं श्रवणाचन्द्रमेव च।

गणयेत्तद्युतिं कुर्याद्योगः स्यादृक्षशेषतः।।32।।

विष्कुम्भ, प्रीति, आयुष्मान्, सौभाग्य, शोभन, अतिगंड, सुकर्मा, धृति, शूल, गण्ड, वृद्धि, ध्रुव, व्याधात, हर्षण, वज्र, सिद्धि, व्यतीपात, वरीयान, परिघ, शिव, सिद्धि, साध्य, शुभ, शुक्ल, ब्रह्मा, ऐन्द्र और वैधृति ये सत्ताईस योग शास्त्र में कथित हैं।29–32।।

बबादिसप्तकरणानि–

बबाह्वयं बालवकौलवाख्ये, ततो भवेत्तै तिलनामधेयम्।

गराभिधानं वणिजं च विष्टिरित्याहुरार्या करणानि सप्त।।33।।

चतुर्द शी या शशिना विहीना तस्या विभागे शकुनिर्द्वितीये।

दर्शाघयोस्तच्चतुरंघ्रिनागो किंस्तुघ्नमाद्ये प्रतिपद्दले च।।34।।

बब, बालव, कौलव, तैतिल, गर, वणिज, विष्टि ये सात चर करण हैं और कृष्ण पक्ष की चतुर्दशी के अन्त में शकुनि अमावास्या के पूर्वार्ध में चतुष्पद, उत्तरार्ध में नाग, शुक्ल प्रतिपदा के पूर्वार्ध में किंस्तुघ्न ये चार स्थिर करण है।।23–34।।

विष्टि–ज्ञानम्–

एकादश्यां चतुर्थ्यां च शुक्ले पक्षे परे दले।

अष्टम्यां पूर्णिमायां च भद्रा पूर्वदले स्मृता।।35।।

तृतीयायां दशम्यां च कृष्णे पक्षे परे दले।

सप्तमयां च चतुर्दश्यां भद्रा पूर्वदले भवेत्।।36।।

शुक्ल पक्ष की एकादशी, चतुर्थी के उत्तरार्ध में और अष्टमी, पूर्णिमा के पूर्वार्ध में भद्रा होती है। कृष्ण पक्ष की तृतीया, दशमी के उत्तरार्ध और सप्तमी, चतुर्दशी के पूर्वार्ध में भद्रा होती है।35–36।।

भद्रा–वासः–

कन्या–तुला–मकर–धन्विषु नागलोके

मेषालिवैणिकवृषेषु सुरालये स्यात्।

पाठीन–सिंह घट–कर्कटकेषु मर्त्ये

चन्द्रे वदन्ति मुनयस्त्रि विधां हि विष्टिम्।।37।।

कन्या, तुला, धनु, मकर राशि के चन्द्रमा होने पर यदि भद्रा हो तो भद्रा का वास पाताल लोक में रहता है और मेष, वृष, मिथुन, विश्चिक राशि के चन्द्र में स्वर्ग लोक में तथा कर्क, सिंह, कुम्भ, मीन के चन्द्र में मृत्युलोक में भद्रा का निवास होता है। मृत्युलोक की भद्रा शुभ नहीं है।।37।।

3. अथ राशिप्रकरणम्

राशिनामानि–

मेषो वृषोऽथ मिथुनं कर्कटः सिहकन्यके।

तुलाऽथ वृश्चिको धन्वी मकर कुम्भमीनकौ।।1।।

मेषवृश्चिकयोभौमः शुक्रो वृषतुलाधिपः।

बुधः कन्यामिथु नयोः पतिः कर्कस्य चन्द्रमाः।।

जीवो मीनधनुः स्वामी शनिर्मकरकुम्भयोः।

सिंहस्याधिपतिः सूर्यः कथितो गणकोत्तमैः।।2।।

मेष–वृश्चिक का स्वामी मंगल, वृष तुला का अधिपति शुक्र, कन्या–मिथुन का स्वामी बुध, कर्क का स्वामी चन्द्रमा, मीन–धनु का स्वामी वृहस्पति, मकर–कुम्भ का स्वामी शनि और सिंह का स्वामी सूर्य हैं।।2।।

उच्चनीचग्रहानाह–

अजवृषभमृगाङ्गनाकुलीरा झषवणिजौ च दिवाकरादितुङ्गाः।

दशशिखिमनुयुक्तिथीन्द्रियांशैस्त्रिनवर्कांशतिभिश्च तेऽस्तनीचाः।।3।।

सूर्य मेष में 10 अंश परमोच्च, चन्द्रमा वृष में 3 अंश, भौम मकर में 28 अंश, बुध कन्या में 15 अंश, गुरु कर्क में 5 अंश, शुक्र मीन में 27 अंश, शनि तुला में 27 अंश परम नीच, 20 अंश परमोच्च है और उच्च से सातवीं राशि में है।।3।।

चन्द्रवासमाह्–

मेषे च सिंहे धनुपूर्वभागे वृषे च कन्या मकरे च याम्ये।

युग्मे तुलायां च घटे प्रतीच्यां कर्कालिमाने दिशि चोत्तरस्याम्।।4।।

मेष, सिंह, धनु, राशि में पूर्व, वृष, कन्या, मकर राशि में दक्षिण, मिथुन, तुला कुम्भ राशि में पश्चिम और कर्क, वृश्चिक, मीन राशि में उत्तर दिशा में चन्द्रमा का वास होता है।।4।।

राशिपरिज्ञानम्–

अश्विनी भरणी कृत्तिकापादे मेषः।

कृत्तिकायास्त्रयः पादा रोहिणी मृगशिरोऽर्द्धं वृषः।।5।।

मृगशिरोऽर्धमार्द्रा पुनर्वसुपादत्रयं मिथुनम्।

पुनर्वसुपादमेकं पुष्य अश्लेषान्तं कर्कः।।6।।

मघा च पूर्वाफाल्गुनी उत्तरापादे सिंहः।

उत्तरायास्त्रयः पादा हस्ताश्चित्रार्ध कन्या।।7।।

चित्रार्ध स्वातिविशाखापादत्रयं तुला।

विशाखापादमेकमनुराधा ज्येष्ठान्तं वृश्चिकः।।8।।

मूलम् च पूर्वाषाढा उत्तरापादे धनुः।

उत्तरायास्त्रयः पादाः श्रवणो धनिष्ठार्ध मकरः।।9।।

धनिष्ठार्ध शतभिषा पूर्वाभाद्रपदापादत्रयं कुम्भः।

पुर्वाभाद्रपदपादमेकमुत्तरा रेवत्यन्तं मीनः।।10।।

अश्विनी, भरणी और कृत्तिका के एक पाद (चरण) पर्यन्त मेष राशि होती है, कृत्तिका के तीन चरण, रोहिणी और मृगशिरा के दो चरण वृष राशि, मृगशिरा के दो चरण, आर्द्रा और पुनर्वसु के तीन चरण मिथुन राशि, पुनर्वसु का एक चरण पुण्य, आश्लेषा कर्क राशि, मघा, पूर्वाफाल्गुनी और

उत्तराफाल्गुनी के एक चरण सिंह राशि है, उत्तराफाल्गुनी के तीन पाद, हस्त तथा चित्रा के दो चरण, कन्या, चित्रा के दो चरण, स्वाती, विशाखा के तीन चरण, तुला, विशाखा के एक चरण, अनुराधा और ज्येष्ठा, वृश्चिक, मूल, पूर्वाषाढा और उत्तराषाढा के एक चरण, धनु, उत्तराषाढ़ा के तीन चरण, श्रवण और धनिष्ठा के दो चरण, मकर, धनिष्ठा के दो चरण शतमिषा और पूर्वाभाद्रपदा के तीन चरण, कुम्भ एवं पूर्वाभाद्रपदा का एक चरण, उत्तराभाद्रपदा और रेवती मीन राशि होता है। (स्पष्टार्थ अग्रिम चक्र रखें) ।।5–10।।

चन्द्रफलम्–

सम्मुखे चार्थलाभाय पृष्ठे चन्द्रे धनक्षयः।

दक्षिणे सुखसम्पत्तिर्वामे तु मरणं ध्रुवम्।।11।।

सम्मुख चन्द्रमा कार्य के आरम्भ में के यात्रा में धन का लाभ करता है और पीछे का चन्द्रमा धन का विनाश, दाहिने सुख और सम्पत्ति तथा वाम चन्द्रमा निश्चय मरण करता है।।11।।

आद्ये चन्द्रः श्रियं कुर्यान्मनस्तोषं द्वितीयके।

तृतीये धनसम्पत्तिश्चतर्थे कलहागमः।।12।।

पञ्चमे ज्ञानवृद्धिश्च षष्ठे सम्पत्तिरुत्तमा।

सप्तमे राजसम्मानं मरणं चाष्टमे तथा।। 13।।

नवमे धर्मलाभश्र दशमे मनसेप्सितम्।

एकादशे सर्वलामो द्वादशे कवेलं क्षतिः।। 14।।

प्रथम (जन्म) राशि के चन्द्र में लाभ, दूसरे में मन का सन्तोष, तीसरे धन सम्पत्ति, चौथे में झगड़ा, पाँचवें में ज्ञान की वृद्धि, छठे में उत्तम

सम्पत्ति, सातवें में राज सम्मान, आठवें में मरण (अतिक्लेश), नवें में धर्मलाभ, दसवें मनोभिलषित सिद्धि, ग्यारहवें में सर्वलाभ, बारहवें में केवल हानि होती है।

ग्रहाणां भुक्तसंख्या–

सप्तविंशति शुक्रः स्यादेकविंशद् बुधस्तथा।

त्रिपक्षं भूमिपुत्रस्तु मासमेकं तु भास्करः।। 15।।

गुरुस्त्रिदशमासांश्च त्रिंशन्मासान् शनैश्चरः।

राहुकेतू सार्धवर्ष ग्रहसंख्या विगद्यते।। 16।।

एक राशि पर शुक्र सत्ताईस दिन, बुध इक्कीस दिन, मंगल डेढ़ महीना, सूर्य एक मास, वृहस्पति तेरह महीना, शनैश्चर ढाई वर्ष और राहू–केतू डेढ़–ढेढ़ वर्ष रहते हैं।

4 – अथ मुहुर्तप्रकरणम्

तदात्रौ गर्भाधानम्

स्त्रीणामृतुर्भवति षोडशवासराणि

तत्रादितः परिहरेच्च निशाश्चतस्रः।

युग्मासु रात्रिषु नरा विषमासु नार्यः

कुर्यान्निषेकमथ तेष्वपि पर्ववर्ज्यम्।। 1।।

स्त्रियों के गर्भाधान में रजोदर्शन के दिन से सोलह दिन तक गर्भाधान का समय है, जिनमें प्रथम चार रात्रि छोड़कर शेष बारह दिन के भीतर विषम रात्रि 5–7–9 इत्यादि से सहवास करने से कन्या और सम रात्रि 6–8–10 इत्यादि में सहवास करने से पुत्र होता है। किन्तु इसके भीतर पर्वदिन में सहवास का अषेध है।

पर्वाणि यथा –

चतुर्दश्यष्टमी चैव अमावास्या च पूर्णिमा ।

पर्वाण्येतानि राजेन्द्र रविसंक्रान्तिरेव च ।।2।।

चतुर्दशी, अष्टमी, अमावास्या, पूर्णिमा और संक्रान्ति ये पर्व के दिन है ।।2।।

गर्भाधाने विहितनक्षत्राणि –

हरिहस्तानुराधाश्च स्वातीवरुणवासवम् ।

त्रीण्युत्तराणि मूलं च रोहिणी चोत्तमा स्मृता।।3।।

चित्रादैत्येन्द्रतिष्याणि तुरगं च मसध्यमम् ।

शेषभान्यधमान्याहुर्वर्जनीया निषेचके ।।4।।

श्रवण, हस्त, अनुराधा, स्वाती, शतभिषा, धनिष्ठा, उत्तराफाल्गुनी, उत्तराषाढ़ा उत्तराभाद्रपद, मूल और रोहिणी ये नक्षत्र गर्भाधान में उत्तम हैं। चित्रा, पुनर्वसु पुष्य और आश्विनी ये नक्षत्र गर्भाधान के लिए मध्यम कहे गये हैं और शेष नक्षत्र वर्जित है।। 3–4।।

गर्भाधाने विहिततिथय :–

नन्दा भद्रा स्मृता पुंसि स्त्रीघु पूर्णा जया स्मृता।

रिक्ता नपुंसके ज्ञेया तस्मात्तां परिवर्जयेत् ।।5।।

नन्दा तथा भद्रा तिथि पुरुष संज्ञक हैं। जया और पूर्णा स्त्री संज्ञक हैं। रिक्ता नपुंसक संज्ञक है। पुरुष और स्त्री संज्ञक तिथि में गर्भाधान शुभ है और नपुंसक संज्ञक में वर्जित है ।।5।।

गर्भाधाने विहितदिनानि–

वासरा पुत्रदाः प्रोक्ताः कुजार्कगुरवो ध्रुवम् ।

कन्यादौ भृगुशीतांशू क्लीबदौ शनिचन्द्रजौ ।।6।।

वृहस्पति, रवि और मङ्गल इन दिनों में गर्भाधान से पुत्र होता है और शुक्र एवं सोम में कन्या तथा शनि और बुध में नपुंसक होता ।।6।।

सूतीस्नानम् –

करेन्द्रभाग्यानिलवासवान्त्यमैत्रैन्दवाश्विध्रुवभेऽह्नि पुंसाम् ।

तिथावरिक्ते शुभमामनन्ति प्रसूतिकास्नानविधौ मुनीन्द्राः ।।7।।

हस्त, ज्येष्ठा, पूर्वाफाल्गुनी, स्वाती, घनिष्ठा, रेवती और अनुराधा, अश्विनी, एवं ध्रुवसंज्ञक नक्षत्रों में तथा पुरुषसंज्ञक दिन में एवं रिक्ता

वर्जित तिथि में बालक सहित प्रसूती को स्नान करना मुनि लोगों ने शुभ कहा है।।7।।

स्नाता प्रसूताप्यसुता बुधे च स्नाता च वन्ध्या भृगुनन्दने च।

सौरे च मृत्युः पयहानिरिन्दौ पुत्रार्थलाभौ रविभौमजीवे ।।8।

बुधवार में स्नान करने से प्रसूता स्त्री असुता (पुत्ररहित) हो जाती है, शुक्रवार में स्नान करने से वन्ध्या (मृतवन्ध्या) होती है, शनिवार में स्नान मृत्युकारक होता है, सोमवार में स्नान करने से स्तन्य (दूध) का नाश होता है तथा रवि, मङ्गल और गुरुवार में स्नान करने से पुत्र, धन और इच्छित वस्तु प्राप्त होती है।।8।।

प्रसूतिशुद्धदिवसाः–

अजा गावो महिष्यश्च ब्राह्मणां नवसूतिका।

दशाहेनैव शुद्ध्यन्ति भूमिष्ठञ्च नवोदकम्॥9॥

महीषी, बकरी, गौ और ब्राह्मणी ये सब प्रसूति होने पर और भूमि ठ नवीन जल दश दिन के बाद शुद्ध हो जाता है।।9॥

नामकरणम्–

वास्वादित्यगुरूत्तरादिति मृगैश्चित्राऽनुराधानिलैः

मूलावैष्णवरेवतीन्दुतुरगैः संज्ञा प्रकुर्याच्छिशोः।

वारेऽहर्पतिचन्द्रवाक्पतिबुधे लग्ने गुरौ शोभने

सौम्यैः केन्द्रनवात्मजन्मसहितैः पापैश्च शेषस्थितैः॥10॥

धनिष्ठ, पुनर्वसु, पुण्य, तीनों उत्तरा (उत्तराफाल्गुनी, उत्तराभाद्रपदा, उत्तराषाढ़ा), हस्त, मृगशिरा, चित्रा, अनुराधा, स्वाती, मूल, श्रवण, रेवती, ज्येष्ठा और अश्विनी इन नक्षरों में रवि, सोम, बुध और बृहस्पति दिनों में शुभ लग्नस्थ बृहस्पति हों और शुभग्रह 1–4–7–10–9–5 इन स्थानों में हों या जन्मराशि में शुभग्रह हों, पाप ग्रह शेष स्थान में हों तो नामकरण शुभ है ॥10॥

निष्क्रमणम्–

आर्द्राऽधोमुखविर्जतानुपहतक्षें वाप्यरिक्ते तिथौ

वारे भौमशनीतरे घटतुलासिंहालिकन्योदये।

सद्दृश्टेऽथ चतुर्थमासि यदि वा मासे तृतीये शशि–

न्यक्षीणे शुभदं शिशोरथ गृहान्निष्कासनं कारयेत् ॥11॥

आर्द्रा, अधोमुख और सूर्य किरण से हत नक्षत्रों से रहित नक्षरों में रिक्त वर्जित तिथि और मङ्गल तथा शनिरहित दिनों में कुम्भ, तुला, सिंह, वृश्चिक और कन्या लग्नों में शुभग्रह की दृष्टि हो, तीसरे और चौथे महीने में, शुकलपक्ष मं बालक को प्रथमतः बाहर निकालना शुभ है ॥11॥

भूम्युपवेशनम्–

पृथ्वीं वराहं विधिवत्प्रपूज्य शुद्धे कुजे पञ्चममासि बालम्।

क्षिप्रध्रुवे सत्तिथिवासराद्ये निवेशयेत्कौ कटिसूत्रबद्धम् ॥12॥

पृथ्वी और वराहरूप भगवान की विधिवत पूजा करके, मंङ्गल शुद्ध हों, पाँचवें महीने में क्षिप्र और ध्रुव संज्ञक नक्षत्रों में शुभ तिथि और शुभ

दिन में बालक को कटि–सूत्र (करधन) कमर में बाँधकर पृथ्वी पर बैठाना शुभ है।

शिशुविलोकनम्

तृतीये मासि यात्रोक्ततिथावह्नचर्कचन्द्रयोः।

वारे च कुलरीत्या वा शुभं शिशुविलोकनम्।। 13।।

तीसरे महीने में और यात्रा में कहे तिथि–नक्षत्रों में रवि, सोम दिन में अपने कुलाचार के अनुसार बालक को प्रथम बार देखना शुभ है।

दन्तोत्पत्तिकथनम्

जन्मतः पञ्चमासेषु दन्तोत्पत्तिर्न शोभना।

शुभा षष्ठादिके ज्ञेया न सदन्तजनिः शुभा।। 14।।

जन्म से पाँचवें महीने तक बालक को दाँत होना अशुभ है और छठे आदि महीने से शुभ है तथा दाँत के सहित बालक का जन्म होना शुभ नहीं है।

अन्नप्राशनमुहूर्त

आद्यान्नप्राशने पूर्वाः सार्पेशजलपान्तकाः।

नक्षत्रेषु परित्याज्यौ वारौ भौमार्कनन्दनौ।। 15।।

द्वादशी सप्तमी रिक्ता पर्वनन्दाविवर्जिताः।

लग्नेषु चाण्डजस्त्याज्यस्तथा मेषसरीसृपौ।। 16।।

शुक्लपक्षः शुभो योगः संग्राह्यः शुभचन्द्रमाः।

मासौ षष्ठाष्टभौ पुंसां स्त्रीणां मासाश्च पंचमः।। 17।।

प्रथम अन्नप्राशन के समय तीनों पूर्वा, आश्लेषा, आर्द्रा, शतभिषा, भरणी और श्वती ये नक्षत्र त्याज्य है, मंगल और शनैश्चर के दिन त्याज्य है, द्वादशी 12 सप्तमी 7 स्क्ता 4–9–14 पर्व 30, 15, कृष्णाष्टमी 8 संक्रान्ति, नन्दा 1–8–11 ये सब तिथि एवं मीन, मेष और वृश्चिक ये लग्न त्याज्य हैं, उक्त निषिद्ध के अतिरिक्त अन्य नक्षत्र, अन्य वार और तिथियाँ, शुभयोग शुभ चन्द्रमा सब ग्राह्य है तथा पुरुषों के लिए जन्म से छठाँ या आठवाँ महीना एवं स्त्रियों के लिए पाँचवां महीना ग्राह्य है।

मुण्डनमुहूर्त

पुनर्वसुद्वये ज्येष्ठामृगे च श्रवणत्रये।

हस्तत्रयेऽश्विरेवत्यां शुक्लपक्षोत्तरायणे।। 18।।

लग्ने गौस्त्रीधनु–कुम्भे मकरे मन्मथे तथा।

सोम्ये वारे शुभे योगे चूडाकर्म स्मृतं बुधैः।। 19।।

पुनर्वसु, पुष्य, ज्येष्ठा, मृगशिरा, श्रवण, धनिष्ठा, शतभिषा, हस्त, चित्रा, स्वाती, अश्विनी और रेवती इन नक्षत्रों में, शुक्लपक्ष और उत्तरायण (मकर, कुम्भ, मीन, मेष, वृष और मिथुन) के सूर्य में, वृष, कन्या, धनु, कुम्भ, मकर और मिथुन लग्न में, सौम्य अर्थात् सोम, बुध, गुरु और शुक्र इन वारों में एवं शुभयोग में पण्डितों ने मुण्डन (चूडाकर्म) करने की विधि कही है।

विद्यारम्भमुहूर्त

हस्तत्रये हरिद्वन्द्वे पूर्वाश्विमृगपञ्चके।

मूले पूष्णि च नक्षत्रे बुधेऽर्के गुरुशुकयोः।। 20।।

देवोत्थाने मीनचापे लग्ने वर्षे च पञ्चमे।।

विद्यारम्भोऽत्र वर्ज्याश्च षष्टयनध्यायरिक्तकाः।। 21।।

हस्त, चित्रा, स्वाती, श्रवण, धनिष्ठा, तीनों पूर्वा, अश्विनी, मृगशिरा, आर्द्रा, पुनर्वसु, पुष्य, आश्लेषा, मूल और रेवती इन नक्षत्रों में, सूर्य, बुध, गुरु, शुक्र इन वारों में, देवोत्थान में अर्थात् कार्तिक शुक्ला 11 से आषाढ़ शुक्ला 10 पर्यन्त, मीन और धनु लग्न में और पाँचवें वर्ष में विद्यारम्भ करना चाहिए। विद्यारम्भ के षष्ठी 6, अनध्याय (अष्टमी तथा प्रतिपदा) और रिक्ता 4–9–14 तिथियाँ वर्जित हैं।

यज्ञोपवीतमुहूर्त

पूर्वाषाढाश्विनीहस्तद्वये च श्रवणद्वये।
ज्येष्ठाभगमृगे पुष्ये रेवत्यां चोत्तरायणे।। 22।।
द्वितीयायां तृतीयायां दशमीत्रये।
सूर्ये शुक्रे गुरौ चन्द्रे बुधे पक्षे तथा सिते।। 23।।
लग्ने वृषधनुःसिंहे कन्यामिथुनयोरपि।
व्रतबन्धः शुभे योगे ब्रह्मक्षत्रविशां भवेत्।। 24।।

पूर्वाषाढ़ा, अश्विनी, हस्त, चित्रा, श्रवण, धनिष्ठा, शतभिषा, ज्येष्ठा, पूर्वा–फाल्गुनी, मृगशिरा, पुष्य और रेवती इन नक्षत्रों में, उत्तरायण में द्वितीया, तृतीया, पञ्चमी, दशमी, एकादशी और द्वादशी इन तिथियों में, सूर्य, सोम बुध, गुरु और शुक्र इन वारों में, शुक्लपक्ष में वृष, धनु, सिंह, कन्या और मिथुन इन लग्नों एवं शुभयोग में ब्राह्मण, क्षत्रिय और वैश्य इन तीनों वर्णों का यज्ञोपवीत (जनेऊ) होना चाहिए।

अथ उपनयने वर्षशुद्धि

विप्राणां व्रतबन्धनं निगदितं गर्भाज्जनेर्वाष्टमे
वर्षे वाप्यथ पञ्चमे क्षितिभुजां षष्ठे तथेकादशे।
वैश्यानां पुनरष्टमेऽप्यथ पुनः स्याद् द्वादशे वत्सरे
कालेऽथ द्विगुणे गते निगदिते गौणं तदाऽहुर्बुधाः।। 25।।

ब्राह्मणों के लिए गर्भ से या जन्म से आठवें और पाँचवें वर्ष में, क्षत्रियों के लिए गर्भ से या जन्म से छठे और ग्यारहवें वर्ष में एवं वैश्य के लिए आठवें और बारहवें वर्ष में व्रतबन्ध विद्वानों ने श्रेष्ठ कहा है, और कहे हुए समय से यदि द्विगुण समय व्यतीत हो जाय तो 'गौण' काल होता है।

उपनयने गुरुशुद्धि

बटु–कन्या–जन्म–राशेस्त्रिकोणायद्विसप्तगः।

श्रेष्ठो गुरुः खषट्त्र्याद्ये पूजयाऽन्यत्र निन्दितः।। 26।।

बालक या कन्या की जन्मराशि से 9–5–11–2–7, राशि में स्थित गुरु श्रेष्ठ है और 10–6–3–1 इन राशियों में स्थित गुरु पूज्य है तथा अन्यत्र 4–8–12 में गुरु निषिद्ध है अर्थात् श्रेष्ठ नहीं है।

गुरुदौष्टचयादौ परिहारमाह

स्वोच्चे स्वभे स्वमैत्रे वा स्वांशे वर्गोत्तमे गुरुः।

रिःफाष्टतुर्यगोपीष्टो नीचारिस्थः शुभोऽप्यसत्।। 27।।

अपने उच्च में, गृह में, अपने मित्र की राशि में, अपने नवांश में, अपने वर्गोत्तम में स्थित रहने से गुरु द्वादश, चतुर्थ, अष्टम राशि में रहने पर भी शुभ हैं। नीच और शत्रु राशि में स्थित गुरु शुभ होने पर भी अशुभ फल देते हैं।

अथ छुरिकाबन्धनम्

विचैव्रतमासादौ विभौमास्ते विभूमिजे।

छुरिकाबन्धनं शस्तं नृपाणां प्राग्विवाहतः।। 28।।

चैत्र को छोड़ व्रतबन्ध में कहे हुए महीनों में भौमास्त तथा बुधवार को छोड़कर विवाह से पहले राजाओं को हथियार बाँधना शुभ है।